بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-25.02.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का इस उम्मत पर इतना महान उपकार है कि उसका धन्यवाद नहीं हो सकता, यदि वे समस्त सहाबियों को एकत्र करके यह आयत न सुनाते कि सारे नबियों का देहान्त हो चुका है तो यह उम्मत नष्ट हो जाती।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 25 फ़रवरी 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन हो रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तिम हज के लिए जुमेरात अथवा शनिवार क दिन जबकि ज़ीक़अदा महीने क छः दिन शेष थे, रवाना हुए। उस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास एक ऊँट है हम उस पर अपनी यात्रा की सामग्री लाद लेते हैं तो आप स. ने फ़रमाया- ऐसा ही कर लो। रास्ते में हज़रत अबू बकर रज़ी. के सेवक से वह ऊँट कहीं गुम हो गया तो आप रज़ी. उस सेवक को मारने के लिए उठे किन्तु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने केवल मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि इस महरम (हज़रत अब बकर रज़ो. जा एहराम बांध हुए थ) को देखो यह क्या करने लगा है। सहाबियों को जब आँहज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यात्रा सामग्री गुम हो जाने का ज्ञान हुआ तो व आटे खजूर तथा मक्खन से तय्यार किया हुआ एक उत्तम हलवा 'हीस' लेकर आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को सवक पर क्रोधित होने से रोका तथा फ़रमाया कि ऐ अबू बकर! विनम्रता धारण करो। बाद में हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ी. जो क़ाफ़िले के पीछे पीछे चला करते थे, जब पहुंचे तो वह ऊँट उनके साथ था।

अन्तिम हज की यात्रा के समय ही जुलहलीफ़ा नामक स्थान पर हज़रत अबू बकर रज़ी. के हाँ आप रज़ी. की पतनी असमा सुपुत्री अमीस रज़ी. के पेट से मुहम्मद बिन अबू बकर का जन्म हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि असमा स्नान कर लें तथा हज का एहराम (वस्त्र) बाँध लें तथा बैतुल्लाह के तवाफ़ के अतिरिक्त हाजियों की भांति अन्य सारे काम करें।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अस्फ़ान की घाटी से होकर निकले तो हज़रत अबू बकर रज़ी. से हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलहिस्सलाम का हुलयिा बयान करते हुए फ़रमाया कि यहाँ से वे दोनों तलबियः (लब्बक अल्लाह्म्मा लब्बक) कहते हुए बैतुल अतीक़ के हज के लिए निकले थे।

हज्जतुल विदा (अन्तिम हज) के अवसर पर जिन लोगों के साथ क़ुर्बानी के पशु थे उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. भी शामिल थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी अन्तिम बीमारी में फ़रमाया कि अबू बकर से कहो कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ। हज़रत आयशा रज़ी. ने यह सोच कर कि हज़रत अबू बकर रज़ी. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्थान पर खड़े हुए तो अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण न रख पाएँगे, हज़रत हफ़सा रज़ी. से कह दिया कि वे हज़रत उमर रज़ी. से नमाज़ की इमामत का कह दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात को नापसन्द किया और फ़रमाया- अबू बकर से ही कहो, वही लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ। इन्ही दिनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रोग में कुछ कमी अनुभव की तो मस्जिद में तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. नमाज़ पढ़ा रहे थे, वे आप स. को देख कर पीछे हटे परन्तु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारे से मना फ़रमाया और फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास ही बैठ गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ते और लोग हज़रत अबू बकर रज़ी. की नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ते।

सही बुख़ारी में लिखी एक रिवायत के अनुसार जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ आप स. ने अपने हुजरे का पर्दा उठाया तथा नमाज़ियों को देख कर मुस्कुराए। हज़रत अबू बकर रज़ी. यह समझे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ ला रहे हैं। अतः आप रज़ो. पीछे हटने लगे किन्तु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें इशारे से मना किया और पर्दा डाल दिया।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तो उस समय हज़रत अबू बकर रज़ी. मदीना के ग्रामीण क्षेत्र के सख़ नामक एक गाँव में थे। यह सूचना सुनकर हज़रत उमर रज़ी. खड़े हुए और कहने लगे- अल्लाह की क़सम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन नहीं हुआ। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ी. आ गए और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे से कपड़ा हटाया और आप स. को चूमा और फ़रमाया- मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, आप स. जीवन में भी तथा मृत्यु के समय भी पवित्र एवं निर्मल हैं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, अल्लाह आप स. को कभी दो मृत्यु का स्वाद नहीं चखाएगा। फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. बाहर तशरीफ़ लाए तथा हज़रत उमर रज़ी. को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया- ऐ क़सम खाने वाले, ठहर जा। फिर आप रज़ी. ने ईश्वर की स्तुति की और फ़रमाया- देखो, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूजता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो निःसन्देह ही फ़ौत हो गए हैं और जो अल्लाह को पूजता था उसे याद रहे कि अल्लाह जीवित है और वह कभी नहीं मरेगा। उसके बाद आप रज़ी. ने यह आयत पढ़ी कि- اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ अर्थात तुम भी मरने वाले हो

और वे भी मरने वाले हैं, आर यह आयत भी पढ़ी कि- وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ اَفَاْئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो केवल एक रसूल हैं, आपसे पहले सब रसूल फ़ौत हो चुके हैं, क्या यदि आप फ़ौत हो जाएँ अथवा हत्या कर दिए जाएँ तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे? यह सुन कर लोग इतना रोए कि हिचकियाँ बंध गईं। हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि अल्लाह की क़सम, ऐसा लगता था कि लोगों ने यह आयत हज़रत अबू बकर रज़ी. से सीखी है, फिर लोगों में से जिस आदमी को भो मैंने देखा, वह यही आयत पढ़ रहा था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उपरोक्त दोनों आयतें पढ़ीं तो सहाबियों पर वास्तविकता प्रकट हुई तथा वे अत्यधिक रोने लगे। हज़रत उमर रज़ी. स्वयं बयान फ़रमाते हैं कि मुझे ऐसा लगा कि माना ये दोनों आयतें आज ही अवतरित हुई हैं और मेरे घुटनों में मेरे सिर को उठाने की शक्ति न रही, मेर पाँव लड़खड़ाए तथा मैं दुःख के अति प्रभाव के कारण धरती पर गिर पड़ा।

इसी संदर्भ में मुसलमानों की जो पहली सहमति है उसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि यह एक ही सहमति सहाबियों की है क्यूँकि उस समय सभी सहाबी वहाँ उपस्थित थे और वास्तव में ऐसा समय मुसलमानों पर पहले कभी नहीं आया क्यूँकि फिर कभी मुसलमान इस प्रकार जमा नहीं हुए। इस इज्तिमा में जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने यह आयत पढ़ी तो सारे के सारे सहाबियों ने आपसे सहमति की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी बात को बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का इस उम्मत पर इतना बड़ा उपकार है कि उसका धन्यवाद असम्भव है, यदि वे समस्त सहाबियों को मस्जिद नबवी में एकत्र करके यह आयत न सुनाते कि सारे नबी फ़ौत हो चुके हैं तो इस उम्मत का विनाश हो जाता क्यूँकि ऐसी अवस्था में उस युग के उपद्रवो विद्वान यही कहते कि सहाबियों का भी यह विचार था कि हज़रत ईसा अलै. जीवित हैं किन्तु अब सिद्दीक़ अकबर के पवित्र आयत को पेश करने से इस बात पर कुल सहाबियों की सहमति हो चुकी है कि सभी पिछले नबी फ़ौत हो चुके हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ख़िलाफ़त के विषय में वर्णन आता है कि सहाबा किराम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन का ज्ञान हो गया तो अन्सार सक़ीफ़ा बनी साअदा में एकत्र हुए और हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. को ख़िलाफ़त के लिए उचित स्वीकार किया। इस सवाल पर कि यदि मुहाजिरों ने इनकी बैअत न की तो क्या होगा, यह सुझाव सामने आया कि एक आदमी अन्सार में से तथा एक आदमी मुहाजिरों में स ख़लीफ़ः हो। परन्तु सअद बिन अबादा रज़ी. ने इसे बनू औस की दुर्बलता कहा।

जिस समय अन्सार सक़ीफ़ः बनी साअदा में एकत्र थे हज़रत उमर रज़ी. और हज़रत अबू उबैदा रज़ी. और दूसरे बड़े बड़े सहाबी मस्जिद नबवी में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन की महान घटना के बारे में चर्चा कर रहे थे जबकि हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत अली रज़ी. तथा अन्य अह्ले बैअत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्नान करान तथा कफन इत्यादि पहनान की व्यवस्था में वयस्त थे।

जब मुहाजिर सहाबियों को अन्सार के इस इज्तिमा की सूचना मिली तो हज़रत अबू बकर रज़ी., हज़रत उमर रज़ी. तथा हज़रत अबू उबैदा रज़ी. सक़ीफ़ः बनी साअदा पहुंचे, वहाँ अभी वार्ता चल रही थी। इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अत्यंत प्रभाव पूर्ण, सुगम एवं सुबोध तथा साहित्य स परिपूण

सम्बाधन किया जिसमें आपने अरबा को पहलो अवस्था तथा प्रारम्भिक महाजिरा को रसलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क विषय मं पष्टि करन को दशा बयान को। फिर अन्सार क इस्लाम कबल करन तथा रसलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क सहायक बनन का अति मन माहक वणन फरमाया। उसक बाद अन्सार का सम्बाधित करत हए आप रज़ो. न फरमाया कि प्रारम्भिक महाजिरा क बाद हमारो दष्टि म तम्हार स्तर का काइ भो नहो, अमोर हमम हाग आर तम वज़ोर, हर एक महत्त्व पण बात म तमस विचार विमश किया जाएगा आर तम्हार बिना महत्त्व पण मामल म निणय नहो करग। आप रज़ो. न फरमाया कि तम लाग जानत हा कि रसलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न फरमाया था कि यदि लाग एक वादो म चल तथा अन्सार दसरो वादो म, ता म अन्सार को वादो म चलगा। फिर आप रज़ो. न हज़रत सअद का सम्बाधित करत हए फरमाया कि ए सअद! तझ पता ह कि त बठा हआ था जब रसलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न फरमाया कि खिलाफत क अधिकारो करश हाग। हज़रत सअद रज़ो. न कहा- आपन सच कहा, हम वज़ोर ह तथा आप लाग अधिकारो ह।

यह वणन आग जारो रहन का इरशाद फरमान क बाद हज़र अनवर अय्यदहल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ोज़ न विश्व को वतमान भयानक स्थिति क बार म दआ को प्ररणा करत हए फरमाया कि विश्व क हालात इत्यत भयावह हा चक ह यदि य इसो प्रकार बढता रहा ता कवल एक दश नहो बल्कि अनक दश इसम शामिल हा जाएग आर फिर इसक भयानक परिणाम का प्रभाव पोढिया तक रहगा। खदा कर कि य लाग खदा तआला का पहचानन वाल हा तथा अपनो सासारिक सतष्टि क लिए मानव प्राणा स न खल। अतएव हम ता दआ कर सकत ह आर करत ह, समझा सकत ह आर समझात ह तथा लम्बो अवधिक स हम यह काम कर रह ह, इन दिना म अहमदिया का बहत दआ करनो चाहिए। अल्लाह तआला कल्पना स दर यद्ध क विनाश स मानवता का बचाए रख, आमोन।

खत्बः क अन्त म हज़र अनवर न मकरम खशो महम्मद शाकिर साहब पव मबल्लिग सोरालियान तथा गनाकरो का सदवणन एव जनाज़ को नमाज़ गायब पढान को घाषणा फरमाइ। मतक पिछल दिना उन्हत्तर वष को आय म वफात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलहि राजिऊन। मरहम अत्यत सरल स्वभाव, अत्यत नक, दआए करन वाल, इबादत गज़ार, निष्ठावान, निःस्वाथ, निधन क पाषक, दानशोल तथा खिलाफत स अत्यधिक स्नह रखन वाल आर जाशेल दाओ इलल्लाह थ। हज़र-ए-अनवर न मरहम को मगफिरत आर दजात को बलन्दो क लिए दआ को।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131